प्रथम सप्ताह (श्राद्ध विशेष)

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों ! इस माह आज 7 सितंबर से 21 सितंबर तक श्राद्ध पक्ष है । इसलिए आज का बाल संस्कार इसी पर केंद्रित है । भारतीय संस्कृति की एक बड़ी विशेषता है कि व्यक्ति अपने जीवित माता-पिता की सेवा तो करता ही है, उनके देहावसान के बाद भी उनके कल्याण की भावना करता है एवं उनके अधूरे शुभ कार्यों को पूर्ण करने का प्रयत्न करता है । जिन्होंने जीवन भर खून-पसीना एक करके इतनी साधन-सामग्री व संस्कार देकर आपको सुयोग्य बनाया उनके प्रति कर्त्तव्य-पालन, उन पूर्वजों की, ईश्वर की प्रसन्नता, अपने हृदय की शुद्धि के लिए यह श्राद्धकर्म करना चाहिए ।

आज की कहानी में हम यह जानेंगे कि जो व्यक्ति जीवन में सत्कर्म और श्राद्ध नहीं करता है उसकी क्या गति होती है और किस प्रकार सर्प योनि में पड़े हुए एक व्यक्ति की विधि

भी पूर्वक श्राद्ध करने से उसके मुक्ति हो जाती है । फिर संस्कृति सुवास में हम यह जानेंगे की श्राद्ध का वैज्ञानिक आधार क्या है, श्राद्ध किस प्रकार पितरों तक पहुंचता है । फिर क्या करें क्या ना करें में हम यह जानेंगे कि श्राद्ध के दिनों में किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए ? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, गतिविधि, हरिओम गुंजन, भजन, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता और अंत में पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे "क्यों जरूरी है श्राद्ध और पिंडदान ?"

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र ।

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

शिखा स्पर्श : सभी बच्चे शिखा के स्थान पर हाथ लगाकर मंत्र उच्चारण करेंगे -

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ

(हे विश्व के देव ! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर करें, और ब्रह्माण्ड में जो भी कल्याणकारक, शुभ गुण, कर्म, स्वभाव, सुख हैं वो हमें प्राप्त हों ।)

अब सभी बच्चे करेंगे "ॐकार" गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें।)

3. आओ सुनें कहानी

श्राद्ध से पिता की सर्पयोनि से मुक्ति

एक समय की बात है, पाटलिपुत्र नामक एक नगर में एक ब्राह्मण रहता था, उसका नाम था शंकुकर्ण । वह ब्राह्मण होकर भी व्यापार करता था । उसने व्यापार से बहुत धन कमाया । वह आस-पास के सभी राज्यों के राजाओं और धनाढ्य व्यक्तियों को उपहार दिया करता था । उसने इतना धन इकट्ठा कर लिया कि अपने घर के बगीचे में कही गुप्त रूप से करोड़ों की संख्या में हीरे, मोती और स्वर्ण गाड़ रखा था किन्तु उसके बारे में अपने पुत्रों और परिवार वालों को भी कभी नहीं बताया ।

उसने तीन विवाह किये, खूब बड़ा परिवार बनाया और सभी पुत्रों को व्यापार में लगा दिया किंतु न तो कभी पितरों का श्राद्ध तर्पण किया और न देवताओं का पूजन किया । बस दिन रात व्यापार से धन कमाना और अपनी वासना की पूर्ति करना यही उसके जीवन का उद्देश्य बन गया था । एक दिन उसने निश्चय किया कि वह एक और विवाह करेगा । उस शंकुकर्ण ने अपना चौथा विवाह करने के लिए पुत्रों और बन्धुओं

के साथ यात्रा की। पहले के जमाने में बैलगाड़ियों और रथों से यात्रा होती थी और दूसरे राज्य में पहुंचने के लिए कई दिन लग जाते थे । मार्ग में आधी रात के समय जब वह सो रहा था, तब एक सांप ने कहीं से आकर उसकी बाँह में काट लिया। उसके काटते ही वह चीख उठा । आसपास से वैद्य बुलाए गए, मणि, मंत्र और औषधि आदि से उपचार किया गया । परंतु जो जीवन में सत्कर्म नहीं करता है, प्राय: उसकी अकाल मृत्यु हो जाती है । शंकुकर्ण ब्राह्मण के प्राण पखेरु उड़ गये, वह मार्ग में ही मर गया । उसके कोई पुण्य कर्म नहीं थे, इसलिए मरने के बाद वह प्रेत बन गया । उसका चित्त अपने गाड़े हुए धन की वासना में बँधा था । उसने सोचा 'मैंने करोड़ों की संख्या में अपना जो धन गाड़ रखा है वो किसी को नहीं दूंगा और स्वयं ही उसकी रक्षा करूँगा।'

वह वही प्रेतयोनि में अपने गड़े हुए धन की रक्षा करने लगा । कई वर्षों बाद उसकी प्रेतयोनि समाप्त हुई, तब वह सर्पयोनि में उत्पन्न हुआ । लेकिन सांप बनकर भी वह उसी स्थान पर बाम्बी बनाकर रहने लगा जहां उसने अपना धन गाड़ रखा था । सांप की योनि में वह सर्दी, गर्मी, वर्षा के थपेडे सहन करता और दु:ख पाता ।

एक दिन वह दु:खी होकर ईश्वर से मुक्ति की प्रार्थना करने लगा । उसकी प्रार्थना के कारण उसके पुत्रों को यह

सपना आया कि उसके पिता धन की रक्षा के लिए सिर्फ योनि में कष्ट और दुख झेल रहे हैं । तब उसके पुत्रों ने सवेरे उठकर बड़े आश्चर्य के साथ एक-दूसरे से स्वप्न की बातें कही । तब एक पुत्र कुदाल हाथ में लिए घर से निकला और बगीचे में चिह्नों से बाँबी को ढूंढ लिया और खोदना आरम्भ किया। तब उस बाँबी से बड़ा भयानक साँप निकला और बोलाः 'ओ मूढ़ ! तू कौन है? किसलिए आया है? यह बिल क्यों खोद रहा है?

पुत्रः "मैं आपका पुत्र हूँ। मैंने रात्रि में स्वप्न देखा तो कौतूहल से यहाँ का सुवर्ण लेने के लिए आया हूँ।"

पुत्र की यह वाणी सुनकर वह साँप हँसता हुआ बोलाः "यदि तू मेरा पुत्र है तो मुझे शीघ्र ही बन्धन से मुक्त कर। मैं अपने पूर्वजन्म के गाड़े हुए धन के ही लिए सर्पयोनि में उत्पन्न हुआ हूँ।"

पुत्रः "पिता जी! आपकी मुक्ति कैसे होगी? इसका उपाय मुझे बताईये ।

पिताः "बेटा ! विधिपूर्वक मेरा श्राद्ध करो, मेरे श्राद्ध के दिन गीता के सातवें अध्याय का पाठ कराओ। वेदविद्या में प्रवीण ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्वक भोजन कराओ। इससे मेरी मुक्ति हो जायेगी।

तब सभी पुत्रों ने उसकी आज्ञानुसार श्राद्ध किया, गीता के सातवें अध्याय का पाठ कराया, ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्वक भोजन कराया, जब विधि पूर्वक श्राद्ध पूरा हुआ तब शंकुकर्ण ने

अपने सर्पशरीर को त्याग दिया, उसे दिव्य देह मिली, उसने सारा धन पुत्रों के अधीन कर दिया, स्वयम विमान में बेठ कर स्वर्गलोक चला गया। उसके पुत्रो को भी श्राद्ध और गीतापाठ के कारण सद्बुद्धि प्राप्त हुई । उन्होंने बावली, कुआँ, पोखरा, यज्ञ तथा देवमंदिर के लिए उस धन का उपयोग किया और अन्नशाला भी बनवायी। फिर वो जीवन भर सातवें अध्याय का सदा जप करते रहे और अंत में मोक्ष प्राप्त किया।

बच्चों, यह भगवत गीता के सातवें अध्याय के महात्म्य की कथा है इसे भगवान शिव जी माता पार्वती को सुनाते हैं । इस कथा को पढ़ने सुनने और सुनाने से बहुत पुन्य प्राप्त होता है । सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - सदगुरुदेव भगवान जी की जय ।

4. भजन / पाठ

आज हम पाठ करेंगे -

श्रीमद् भगवद्गीता के सातवाँ अध्याय :- ज्ञानविज्ञानयोग का

https://youtu.be/icTb8KMi-YY

5. ज्ञान का चुटकुला

चिंटू आंखे बंद करके चम्मच से मिठाई खा रहा था।

रवि - अरे यह क्या कर रहे हो, आंखे बंद करके मिठाई क्यों खा रहे हो ?

चिंटू - वह क्या है कि मुझे कल ही डॉक्टर ने कहा है कि मिठाई को हाथ लगाना तो दूर देखना भी नहीं है। इसलिए ना तो मैं हाथ लग रहा हूं, ना देख रहा हूं, केवल आंख बंद करके चम्मच से खा रहा हूं।

सीख :- खाने-पीने में संयम रखना चाहिए, बहाने नहीं बनना चाहिए।

6. संस्कृति सुवास :-

श्राद्ध का वैज्ञानिक आधार

बच्चों, जब हमारा एक वर्ष बीतता है तो पितृलोक का एक दिन होता है । यानि हम वर्ष में एक बार भी श्राद्ध करते हैं तो आपके पितरों को उनके एक दिन की तृप्ति होती हैं। हम जो ब्राह्मण खिलाते हैं उन चीजों का केवल भाव ही उन तक पहुँचता है और उस भाव से ही वे तृप्त होते हैं । पितृ

लोक से पितर अपने पृथ्वीलोक के सगे-संबंधियों के यहाँ बिना निमत्रंण के पहुँचते है । उनके द्वारा ब्राह्मणों को प्रदान किये गए पदार्थ से वे तृप्त होकर उन्हें अपने आशीर्वाद से कुल को पुष्ट एवं तृप्त करते है । यदि हमारे पूर्वज मरकर पितृ लोक में नहीं बल्कि किसी और योनि में गये हैं, तो उनके अनुरूप उन्हें तृप्ति देनेवाला भोग वहां मिल जाता है । जैसे मनीऑर्डर पर सही पता लिखा होता है तो मनीऑर्डर पहुँचता है, भारत में रुपये जमा करा दें तो अमेरिका में डॉलर और इंग्लैंड में पाउंड होकर मिलते हैं। ऐसे ही जिसका श्राद्ध करते हो उसके कुल-गोत्र का नाम लेकर तर्पण करते हो कि 'आज हम इनके निमित्त श्राद्ध करते हैं' तो उन तक पहुँचता है। इसमें संदेह नहीं करना चाहिए । अन्य मासों की अपेक्षा श्राद्ध के दिनों में चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे निकट रहता है। इसी कारण उसकी आकर्षण शक्ति का प्रभाव पृथ्वी तथा प्राणियों पर विशेष रूप से पड़ता है। इस समय सूक्ष्म शरीर वाले जीवों को पिंड से तृप्त करके उन्हे पितृलोक प्राप्त करा दिया जाता है। श्राद्ध के समय पृथ्वी पर कुश रखकर उसके ऊपर पिंडों में चावल, जौ, तिल, दूध, शहद, तुलसीपत्र आदि डाले जाते हैं । चावल व जौ में ठंडी विद्युत, तिल व दूध

में गर्म विद्युत तथा तुलसी पत्र में दोनों प्रकार की विद्युत होती है। शहद की विद्युत अन्य सभी पदार्थों की विद्युत और वेदमंत्रों को मिलाकर एक साथ कर देती है । कुशाएँ पिंडों की विद्युत को पृथ्वी में नहीं जाने देतीं । शहद ने जो अलौकिक विद्युत पैदा की थी, वह श्राद्धकर्ता की मानसिक शक्ति द्वारा पितरों व परमेश्वर के पास जाती है जिससे पितरों को तृप्ति प्राप्त होती है। जिस प्रकार चारागाह में सैंकड़ों गौओं में छिपी हुई अपनी माँ को बछड़ा ढूँढ लेता है उसी प्रकार श्राद्धकर्म में दिए गये पदार्थ को मंत्र वहाँ पर पहुँचा देता है । ब्रह्माजी ने इसी प्रकार के श्राद्ध की मर्यादा स्थिर की है । अमावस्या के दिन पितृगण वायुरूप में घर के दरवाजे पर उपस्थित रहते हैं और अपने स्वजनों से श्राद्ध की अभिलाषा करते हैं ।

जिन्होंने पितरों को तृप्त नहीं किया है, उनके बच्चे भी उनको तृप्त करने वाले नहीं होते। उनके घर में ऐरे गैरे या लूले लँगड़े या माँ-बाप को दुःख देने वाले बेटे पैदा होते हैं, उसका यही कारण होता है । अंत: पितृपक्ष में प्रयत्न पूर्वक श्रद्धा करना ही चाहिए ।

7. क्या करें क्या न करें ?

श्राद्ध पक्ष में क्या करें क्या ना करें -

श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन भगवत गीता के सातवें अध्याय का माहात्म्य सहित पाठ करना चाहिए और इस पाठ का पुण्य अपने पितरों को अर्पण करना चाहिए इससे उनकी सद्गति होती है ।

जिस दिन श्राद्ध करना हो उस दिन किसी विशिष्ट व्यक्ति को आमंत्रण न दें, नहीं तो उसी की आवभगत में ध्यान लगा रहेगा एवं पितरों का अनादर हो जाएगा । इससे पितर अतृप्त होकर नाराज भी हो सकते हैं।

जिस दिन श्राद्ध करना हो उससे एक दिन पूर्व ही श्रेष्ठ ब्राह्मणों को निमंत्रण दे देना चाहिए ।

श्राद्ध के दिन कोई तपस्वी ब्राह्मण घर पर पधारें तो उन्हें भी भोजन कराना चाहिए।

8. श्लोक :-

श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन पितरों की तृप्ति के लिए निम्नलिखित मंत्र का जप करना चाहिए -

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव भवन्त्युत।।

समस्त देवताओं, पितरों, महायोगिनियों, स्वधा एवं स्वाहा सबको हम नमस्कार करते हैं। ये सब शाश्वत फल प्रदान करने वाले हैं।"

स्वधा देवी पितरों को तृप्त करने में सक्षम है । तो उसी देवी के लिए यह मंत्र उच्चारण करना है । श्राद्ध करते समय यह मंत्र 3 बार बोलने से श्राद्ध फलित होता है :
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधादेव्यै स्वाहा ।

9. गतिविधि

अपने लगभग सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों में सामूहिक श्राद्ध कर्म कराया जाता है । तो सर्व पितृ अमावस्या

के दिन अपने नजदीकी आश्रम में जरुर से जाएँ एवं अपने घर पर सभी बड़ों को आप कहें कि आश्रम में जाकर पितरों की सद्गति हेतु सामूहिक श्राद्ध कर्म में हिस्सा लें ।

बच्चों, श्राद्ध पक्ष में रोज गाय को रोटी, पक्षियों को दाना, कुत्ते को रोटी खिलायें।

10. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है । प्रश्न है,-

"कर्ण ने किस प्रकार के दान की उपेक्षा की थी, जिसके कारण उसे मरने के बाद पुनः पृथ्वी पर उसकी पूर्ति करने आना पड़ा?"

विकल्प है...

[a] भूमि दान [b] अन्न दान

[c] गोदान [d] स्वर्ण दान

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम सभी श्री आशारामायणजी की पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bI57Gh3T4ps (कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-

श्राद्ध और पिंडदान क्यों है जरूरी ?

https://youtu.be/3EnSR3wPBCQ

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- श्राद्ध क्यों करना चाहिए?
- शंकुकर्ण ब्राह्मण की मरने के बाद दुर्गति क्यों हुई?
- शंकुकर्ण ब्राह्मण की मुक्ति कैसे हुई?

- शंकुकर्ण ब्राह्मण के पुत्रों को मोक्ष प्राप्ति कैसे हुई?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- श्राद्ध वर्ष में एक बार क्यों करते है?
- श्राद्ध का भोग पितरों तक कैसे पहुँचता है?
- श्राद्ध में किन किन सामग्री का उपयोग होता है?
- श्राद्ध करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
- श्राद्ध करते समय किस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए?
- श्राद्ध कर्म नहीं करने का क्या परिणाम होता है?
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

14. पूर्णाहूति

आरती - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

<u>दीपज्योति एवं आरती</u> -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है - [B] कर्ण ने धन का दान तो किया था, किन्तु अन्नदान की उपेक्षा की थी, अतः उसे मरने के बाद धन तो बहुत मिला किन्तु क्षुधातृप्ति की कोई सामग्री उसे न दी गयी। कर्ण ने यमराज से प्रार्थना की तो यमराज ने उसे 15 दिन के

लिए पृथ्वी पर जाने की सहमति दे दी। पृथ्वी पर आकर पहले उसने अन्नदान किया, साधु-संतों, गरीबों-ब्राह्मणों को अन्न-जल से तृप्त किया एवं श्राद्धविधि भी की। फिर जब वह ऊर्ध्वलोक में लौटा तब उसे सभी प्रकार की खाद्य सामग्रियाँ ससम्मान दी गयीं ।

****

दूसरा सप्ताह (हिंदी दिवस विशेष)

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों, आज १४ सितम्बर को हिंदी दिवस है, इसलिए आज का बाल संस्कार केंद्रित है इसी विषय पर । क्या आपको पता है, भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, परंतु हिंदी भाषा का स्थान सबसे विशेष है। हिंदी हमारे राष्ट्र की आत्मा है। यह न केवल संचार का साधन है, बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं और संस्कृति की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है । तो "हमारी भाषा, हमारी पहेचान" इस विषय पर आज हम आपको कहानी में सुनाएंगे ।

श्राध्द के दिनों में क्या करें- यह हम जानेंगे क्या करें क्या ना करें में । इसके अलावा भजन, ज्ञान का चुटकुला, प्रतियोगिता प्रश्न और अंत में हम बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे राष्ट्रभाषा हिंदी का सौंदर्य और महत्व अगाध है... । और आज की गतिविधि में हम खेलेंगे अन्ताक्षरी !

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क में रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती फुर्ती मे मदद मिलेगी।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका ऊँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्‌गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे । त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी :-

कहानी - हमारी भाषा, हमारी पहेचान

एक युवक ने इंटरमीडिएट की पढ़ाई के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया था । इतिहास उसका प्रिय विषय था ।

एक बार वह युवक पाठ्यक्रम में निर्धारित अंग्रेज लेखक की लिखी इतिहास की पुस्तक पढ़ रहा था । जिसमें शिवाजी महाराज को एक लुटेरा सरदार कहा गया था । यह पढ़कर भारतीय सनातन धर्म को ही अपनी आन-बान-शान माननेवाले उस सच्चे देशप्रेमी का खून खौल उठा और उस बुद्धिमान, साहसी युवक ने उस कथन को चुनौती दी ।

पुस्तकालयों में जाकर खोज-खोजकर छत्रपति शिवाजी महाराज की महानता, वीरता, सच्चरित्रता, देशप्रेम और सर्वसुहृदता के तथ्य इकट्ठे कर सबके सामने रखे ।

अंततः अंग्रेजों को उस युवक की दृढ़ता के आगे घुटने टेकने पड़े और लोगों की आस्था, विश्वास को ठेस पहुँचानेवाला वह वाक्य पुस्तक से हटाना पड़ा ।

वे युवक थे राममनोहर लोहिया जी ।

उसके बाद लोहिया जी को अंग्रेजी भाषा से इतनी घृणा हो गयी कि उन्होंने किसी भी ब्रिटिश संस्था में प्रवेश लेने से इनकार कर दिया। इंग्लैंड ने भारत को अपना उपनिवेश बना रखा था इसलिए उन्होंने अपने अध्ययन के लिए बर्लिन (जर्मनी) विश्वविद्यालय को चुना।

"हमारा देश, हमारी भाषा" यह मंत्र डॉ. लोहियाजी ने दिया था। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी भाषा का राष्ट्रीय भाषा या एक संयोजक के रूप में समर्थन किया। वे कहते थे : "हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते कि जब हिन्दी विकसित होगी तो उसे राष्ट्रभाषा बनायेंगे। उसे हमारी राष्ट्रभाषा बनने दो। लगातार उपयोग में आने से वह स्वयं ही राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित हो जायेगी।"

लोहियाजी को हिन्दी भाषा से इतना प्रेम था कि वे निष्णात तो थे जर्मन और अंग्रेजी भाषा में किंतु अपने सारे निजी कार्य और बातचीत, यहाँ तक कि लोकसभा में भी वे हिन्दी का ही प्रयोग करते थे।

सन् 1965 में लोहियाजी ने "अंग्रेजी हटाओ" आंदोलन शुरू कर दिया। उन्होंने "हिन्दी यहाँ और अब" नामक एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने अपना अनुभव और अंग्रेजी भाषा की सच्चाई के बारे में लिखा : "अंग्रेजी का प्रयोग मौलिक अधिकारों में बाधा है और हीनभावना उत्पन्न करता है।

पढ़े-लिखों और अनपढ़ जनता के बीच खाई उत्पन्न करता है । तो आओ, हम सब एक होकर हिन्दी को उसके मूल कीर्ति-शिखर तक पहुँचायें ।" सभी बच्चे जोर से बोलेंगे- सद्गुरु देव भगवान की जय...

5. ज्ञान का चुटकुला

चिंटू- अच्छा बताओ, ड्राइवर और कंडक्टर में क्या फर्क होता है?

मिंटू- बहुत सिंपल है यार, कंडक्टर सो गया तो किसी का टिकट नहीं कटेगा... लेकिन अगर ड्राइवर सो गया तो सब का टिकट कट जाएगा ।

सीख - भाषा का प्रयोग सोच समझ कर करना चाहिए ।

6. संस्कृति सुवास

हिंदुस्तान में हिंदी भाषा दिवस क्यों मनाया जाता है ?

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया और तब से हर वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस दिन हम हिंदी के महत्व को

याद करते हैं और यह संकल्प लेते हैं कि अपनी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा को सम्मान देंगे और उसके प्रसार में योगदान देंगे।

हिंदी भाषा सरल, सहज और सरस है। इसकी लिपि देवनागरी है, जो अत्यंत वैज्ञानिक मानी जाती है। हिंदी न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी बड़ी संख्या में बोली और समझी जाती है। यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और भारतीय संस्कृति की पहचान कराती है।

हिंदी भाषा हमारी राष्ट्र की धड़कन है। हिंदी दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि हमें अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए और इसे जीवन के हर क्षेत्र में अपनाना चाहिए।

परंतु आज भारत में अंग्रेजी भाषा को जो इतना महत्त्व और सम्मान दिया जा रहा है और हिन्दीभाषी व्यक्ति को अनपढ़-गँवार की संज्ञा देकर ठुकराया जा रहा है, इससे वर्षों पहले लोहियाजी का वर्गभेद का लगाया गया अनुमान सच होते दिख रहा है । वर्तमान में जो बच्चे अंग्रेजी विद्यालयों में पढ़ते हैं, वे खुद को उच्च वर्ग का मानते हैं, अहंकारी बनते हैं और तदनुसार व्यवहार भी करते हैं ।

आज यदि हम अपने स्वाभिमान, संस्कृति और गौरव की सुरक्षा करना चाहते हैं तो हम सबको एकजुट होकर लोहियाजी के 'हमारा देश, हमारी भाषा' का मंत्र जन-जन तक

पहुँचाना होगा, तभी हम अपनी भाषा, अपनी पहचान को बचाने में सफल हो पायेंगे ।

7. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है।

प्रश्न है,- "हिन्दी दिवस किनके जन्मदिन से जुड़ा हुआ है?"

विकल्प है -

A) राजेंद्र प्रसादजी

B) गांधीजी

C) सरदार वल्लभभाई पटेल

D) सी.वी. रामन

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा।

8. क्या करें, क्या न करें ?

श्राध्द में क्या करें क्या नहीं ?

- श्राद्ध में क्रोध और जल्दबाजी नही करना चाहिए।
- भोजन कराते समय मधुर वाणी से कहना चाहिए कि 'हे महानुभावो ! अब आप लोग अपनी इच्छा के अनुसार भोजन करें।'
- भोजन करते समय ब्राह्मणों को भोजन पदार्थों के गुण नहीं बताना चाहिए ।
- लहसुन, गाजर, प्याज, आदि वस्तुएँ श्राद्धकर्म में निषिद्ध हैं।
- श्राद्ध के अन्त में दान देते समय हाथ में काले तिल, जौ और कुश के साथ पानी लेकर ब्राह्मण को दान देना चाहिए ताकि उसका शुभ फल पितरों तक पहुँच सके, नहीं तो असुर लोग हिस्सा ले जाते हैं।
- जो जाने-अनजाने रह गये हों, जिनकी मृत्यु की तिथि का पता न हो, उनका भी श्राद्ध-तर्पण सर्वपित्री अमावस्या को होता है । अगले रविवार को सर्वपितृ अमावस्या है ।

9) भजन

भजन - अब सभी बच्चे गाएंगे बापूजी की याद में एक प्यारा सा भजन :

आयेंगे गुरुवर, आश हमें है....

https://youtu.be/JmAhXKJgHUk

10) गतिविधि :-

बच्चों, हम सभी हर बार बाल संस्कार में कोई न कोई भजन सुनते है तो आज हम हिंदी भजन की अन्ताक्षरी खेलेंगे । देखते है की कौन कौन भजनों को याद रखता है ? तो दो टीम बना लेंगे । (बच्चे सब एक तरफ और बच्चियां एक तरफ) हमने आज अभी जो भजन सुना उसका आखिरी अक्षर है 'ह' । तो पहली टीम 'ह' के प्रयोग से शुरू होने वाला कोई भी भजन गायेंगे । जैसे की " हम बापूजी के, बापूजी हमारे है..." फिर भजन के आखिरी अक्षर से दूसरी टीम भजन गाएगी । ऐसे गतिविधि चलती रहेगी । बीच में कभी किसी टीम को जो अक्षर आया हो उसके ऊपर से भजन याद न आये तो उनको माइनस पॉइंट्स दिए जायेंगे । आखिरी में जिसके माइनस पॉइंट्स कम होंगे वो विजेता माना जाएगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bI57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्री मुख से सत्संग में सुनेंगे-

राष्ट्रभाषा हिंदी का सौंदर्य और महत्व अगाध है...

https://youtu.be/6AiQfd7L4-8

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- युवक ने इंटरमीडिएट तक की पढाई कहाँ की थी ?
- अंग्रेज लेखक की लिखी हुई पुस्तक में शिवाजी के बारे में क्या लिखा था ?
- अंग्रेजों को किस युवक की दृढ़ता के आगे घुटने टेकने पड़े?
- "हमारा देश, हमारी भाषा" यह मंत्र किसने दिया था ?
- सन् 1965 में लोहियाजी ने कौन सा आंदोलन शुरू कर दिया ?

- हिंदी दिवस हमें क्या स्मरण कराता है ?
- श्राध्द के समय कौनसी चीजें निषिद्ध है ?
- आज के सत्संग से हमें क्या सीख मिलती है ?

14. पूर्णाहूति

दीपज्योति एवं आरती

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे|

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।

A) राजेंद्र प्रसादजी

****